



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 233]  
No. 233]

नई दिल्ली, सोमवार, मई 1, 1989/वैसाख 11, 1911  
NEW DELHI, MONDAY, MAY 1, 1989/VAISAKHA 11, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

वित्त मंत्रालय  
(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचनाएं

नई दिल्ली, 1 मई, 1989

राष्ट्रीय बचत-पत्र (घाठवां निर्गम) नियम, 1989

मा.का.नि. 496(घ),—केन्द्रीय सरकार सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 12 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—

1, संक्षिप्त नाम और प्रारंभ :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राष्ट्रीय बचत-पत्र (घाठवां निर्गम) नियम, 1989 है।

(2) ये 8 मई 1989 को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं :—इन नियमों में जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो :—

(i) "अधिनियम" से सरकारी बचत-पत्र अधिनियम 1959 (1959 का 46) अभिप्रेत है।

(ii) "बैंककारी कम्पनी" से बैंककारी विनियम अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 5 में यथापरिभाषित बैंककारी कम्पनी अभिप्रेत है ;

(iii) "नकदी" से भारतीय करेंसी में नकदी अभिप्रेत है ;

(iv) "पत्र" से राष्ट्रीय बचत-पत्र (घाठवां निर्गम) अभिप्रेत है ;

(v) "कम्पनी" से कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) में यथापरिभाषित कम्पनी अभिप्रेत है ;

(vi) "निगम" से उस समय प्रवृत्त किसी विधि द्वारा या उसके अधीन स्थापित निगम अभिप्रेत है ;

(vii) "फर्म" से भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932 (1932 का 9) के अधीन रजिस्ट्रीकृत फर्म अभिप्रेत है ;

(viii) "प्रारूप" से इन नियमों में संलग्न प्रारूप अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत वे प्रारूप भी हैं जो डाक विभाग द्वारा विहित किए जाएं ;

(ix) "सरकारी कंपनी" से कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 617 में यथापरिभाषित कंपनी अभिप्रेत है ;

- (x) "स्थानीय प्राधिकारी" से नगर निगम नगरपालिका जिला बोर्ड पत्तन आधिकारों का निकाय या अन्य प्राधिकारी अभिप्रेत है जो नगरपालिका या स्थानीय विधि के नियंत्रण या प्रबंध के लिए वैध रूप से हकदार है या जिसे ऐसा नियंत्रण या प्रबंध सरकार द्वारा वैध रूप से व्यस्त किया गया है ;
- (xi) "पुराना पत्र" से अभिप्रेत है डाकघर बचत-पत्र नियम, 1960 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (प्रथम निर्गम) नियम, 1965 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (चतुर्थ निर्गम) नियम, 1970 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (पंचम निर्गम) नियम, 1973 के अधीन दिया गया पत्र या राष्ट्रीय विकास बंधपत्र नियम, 1977 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (छठा निर्गम) नियम, 1981 या राष्ट्रीय बचत-पत्र (सातवां निर्गम) नियम, 1981 या सामाजिक सुरक्षा पत्र नियम, 1982 या किसान विकास पत्र 1988 के अधीन दिया गया बंधपत्र ;
- (xii) "डाकघर" से अभिप्रेत है भारत में का ऐसा विभागीय डाकघर जो बचत बैंक का कार्य कर रहा है और ऐसा अन्य डाकघर जो डाक विभाग द्वारा प्राधिकृत किया गया है ;
- (xiii) "अनुसूचित बैंक" से भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की द्वितीय अनुसूची में तत्समय सम्मिलित बैंक अभिप्रेत ;
- (xiv) "न्यास" से तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत न्यास अभिप्रेत है ।

3. वे अधिधान जिनमें ये पत्र दिए जाएंगे:—राष्ट्रीय बचत-पत्र (आठवां निर्गम) 100र., 500र., 1000र., 5000र., 10 000र. और ऐसे अन्य अधिधानों में दिए जाएंगे जो समय-समय पर केन्द्रीय सरकार द्वारा अधिसूचित किए जाएं ।

4. पत्रों के प्रकार और उनका दिया जाना:—(1) पत्र निम्नलिखित प्रकार के होंगे, अर्थात् :—

- (क) एकल धारक प्रकार के पत्र ;
- (ख) संयुक्त "क" प्रकार के पत्र ; और
- (ग) संयुक्त "ख" प्रकार के पत्र ;

2(क) एकल धारक प्रकार के पत्र निम्नलिखित को दिए जा सकेंगे, अर्थात्:—

- (i) किसी व्यस्क को स्वयं उसके लिए या किसी अवयस्क की ओर से या किसी अवयस्क को ;
- (ii) किसी बैंककारी कम्पनी को जिसमें सहकारी बैंक नहीं है ;
- (iii) किसी कम्पनी को ;
- (iv) किसी निगम को ;
- (v) तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन सोसाइटी के रूप में रजिस्ट्रीकृत किसी संगम संस्था या निकाय को जिसके अन्तर्गत सहकारी सोसाइटी नहीं है ;
- (vi) किसी फर्म को ;
- (vii) किसी स्थानीय प्राधिकारी को ;
- (viii) किसी न्याम को ।
- (ख) संयुक्त "क" प्रकार के पत्रों को दो ऐसे व्यक्तों को जारी किया जा सकेगा जो दोनों धारकों को संयुक्त रूप से या उत्तरजीवी को देय हों ;
- (ग) संयुक्त "ख" प्रकार के पत्रों को दो ऐसे व्यक्तों को संयुक्त रूप से जारी किया जा सकेगा जो धारकों में से किसी को या उत्तरजीवी को देय हों ।

5. पत्रों का क्रय :—धर्मो भी रकम के पत्रों का क्रय किया जा सकेगा ।

6. पत्रों के क्रय के लिए प्रक्रिया :—नियम 4 में विनिर्दिष्ट कोई व्यक्ति या निकाय जो पत्र का क्रय करना चाहता है या तो स्वयं या अन्य बचन स्कीम के किसी प्राधिकृत अधिकारी को मार्फत प्ररूप 1 में आवेदन किसी डाकघर में प्रस्तुत करेगा ।

7. विधिक निविदान :—पत्र के क्रय के लिए संशय निम्नलिखित रीतियों में से किसी में किसी डाकघर में किया जा सकेगा, अर्थात्:—

- (i) नकद ;
- (ii) स्थानीय रूप से निष्पादित बैंक अदायगी आवेश या मांग देय ड्राफ्ट जो डाकपाल के पत्र में लिखा हो ;
- (iii) डाकघर बचत बैंक खाने से प्रत्याहरण के लिए पासबुक सहित प्रत्याहरण प्ररूप जो सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित है, पेश करके ;
- (iv) उस पुराने परिपक्व पत्र का अभ्यर्पण जो निम्नलिखित रूप से सम्यक् रूप से उन्मोचित किया गया है "मैं पत्र के जारी करने से संशय प्राप्त हुआ संलग्न आवेदन देखिए।"

8. पत्रों का जारी किया जाना:—(1) नियम 7 के अधीन संशय करने पर उसके सिवाय जहां संशय बैंक अदायगी आवेश या मांगदेय ड्राफ्ट द्वारा किया जाता है प्रणामास्पद : पत्र तत्काल जारी किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख उनके गंदाय की तारीख होगी ।

(2) जहां पत्र क्रय करने के लिए संशय किसी बैंक अदायगी आवेश या मांग देय ड्राफ्ट के द्वारा किया जाता है वहां यथास्थिति बैंक अदायगी आवेश या मांग देय ड्राफ्ट के आगमों के बसूल होने से पूर्व ऐसा पत्र जारी नहीं किया जाएगा और ऐसे पत्र की तारीख यथास्थिति बैंक अदायगी आवेश या मांग देय ड्राफ्ट के भुताने की तारीख होगी ।

(3) यदि किसी कारण से पत्र तत्काल जारी नहीं किया जा सकता है तो जेला को ऐसी अनंतिम रसीद दी जाएगी जो बाब में पत्र में बदली जा सकेगी और ऐसे पत्र की तारीख वह होगी जो यथास्थिति उपनियम (1) या उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट है ।

9. पुराने पत्र के आगमों के बदले में पत्र :—पुराने पत्र का ऐसा धारक जो उस पत्र के भुताने का हकदार है प्ररूप 1 में इन नियमों के अधीन पत्र दिए जाने के लिए आवेदन कर सकेगा ऐसे आवेदन की प्राप्ति पर आवेदक को इन नियमों के अधीन पत्र जारी किया जाएगा और जारी करने की तारीख वह होगी जिसको सम्यक् उन्मोचित पुराना पत्र प्रस्तुत किया जाता है ।

10. एक डाकघर से दूसरे डाकघर को अन्तरण :—(1) कोई पत्र किसी ऐसे डाकघर से जहां तक वह रजिस्ट्रीकृत है किसी अन्य डाकघर को विहित प्ररूप में धारक या धारकों द्वारा दोनों डाकघरों में से किसी डाकघर में आवेदन करने पर अन्तरित किया जा सकेगा ।

(2) प्रत्येक ऐसे आवेदन पर पत्र के धारक या धारकों द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे :

परन्तु संयुक्त "क" प्रकार के पत्र या संयुक्त "ख" प्रकार के पत्र की दशा में आवेदन पर संयुक्त धारकों में से किसी एक द्वारा हस्ताक्षर किए जा सकेंगे, यदि दूसरा मर गया है ।

11. पत्र का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अन्तरण :—(1) कोई पत्र डाकघर के किसी अधिकारी की लिखित पूर्व सहमति से अन्तरित

किया जा सकेगा जैसे कि नीचे विनिर्दिष्ट है (जिसे इन नियमों में इसके पश्चात् प्राधिकृत डाकपाल कहा गया है)।

वे मामले जिनमें अन्तरण की मंजूरी दी जा सकती है उस अधिकारी का पद-नाम जो अन्तरण की अनुज्ञा देने के लिए सक्षम है

- (क) (i) मृतक धारक के नाम से उसके वारिस को  
(ii) किसी धारक से न्यायालय को या न्यायालय के आदेश के अधीन किसी व्यक्ति को  
(iii) एकल धारक से संयुक्त धारकों के नाम जिनमें अन्तरण एक व्यक्ति होगा  
(iv) संयुक्त धारकों से उनमें से किसी एक के नाम )
- उस डाकघर का डाकपाल जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत है।
- (ख) अन्य मामलों में प्रधान डाकपाल

(2) उपनियम (1) में यथानिर्दिष्ट कोई प्राधिकृत डाकपाल पत्र के अन्तरण के बारे में अपनी सहमति नहीं देगा जबकि निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति हो जाती है, अर्थात्:—

(क) अन्तरिती इन नियमों के अधीन पत्रों का क्रय करने का पात्र है;

(ख) अन्तरण, पत्र की तारीख से कम से कम एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किया जाता है या जहाँ अन्तरण के लिए आवेदन ऐसी अवधि की समाप्ति के पूर्व किया जाता है वहाँ अन्तरण निम्नलिखित प्रवर्गों में से किसी में आता है, अर्थात्:—

(i) नैमिगिक प्रेम और स्नेह के कारण किसी निकट संबंधी को अन्तरण;

स्पष्टीकरण:—इस नियम के प्रयोजन के लिए “निकट संबंधी” से पति, पत्नी, पारम्परिक पूर्व पुरुष या पारम्परिक वंशज, भाई या बहिन अभिप्रेत है।

(ii) मृतक धारक के वारिस के नाम अन्तरण;

(iii) किसी धारक से न्यायालय या न्यायालय के आदेशों के अधीन किसी अन्य व्यक्ति को अन्तरण;

(iv) नियम 12 के अनुसार अन्तरण, और

(v) संयुक्त धारकों में से किसी एक की मृत्यु हो जाने की वशा में उसके उत्तरजीवी के नाम अन्तरण।

(ग) अन्तरण के लिए आवेदन विहित प्ररूप में किया जाता है और उस पर पत्र के धारक या धारकों द्वारा हस्ताक्षर किए जाते हैं;

परन्तु संयुक्त “क” प्रकार के पत्र या संयुक्त “ख” प्रकार के पत्र की दशा में आवेदन पर धारकों में से किसी एक द्वारा हस्ताक्षर जा सकेगा, यदि दूसरा मर गया है।

(3) उपनियम (2) के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना कोई प्राधिकृत डाकपाल केवल किसी अवयस्क की ओर से धारण किए गए पत्र के अन्तरण के बारे में अपनी सहमति देगा, यदि प्रस्तावित अन्तरण के समय, यथास्थिति, अधिनियम की धारा 5 के खंड (ख) के उपखण्ड (i) या उपखण्ड (ii) में निर्दिष्ट मानता या पिता या संरक्षक लिखित रूप में यह प्रमाणित करता है कि अवयस्क जीवित है और ऐसा अन्तरण उसके हित में है।

(4) नियम 12 के अधीन अन्तरण से भिन्न अन्तरण के प्रत्येक मामले में, मूल पत्र को सम्यक् रूप में उन्मोचित किया जाएगा और नए पत्र को जिस पर वही तारीख है जो प्रयुक्त मूल पत्र की है, अन्तरिती के नाम जारी किया जाएगा।

12. पत्र का गिरवी रखा जाना:—(1) विहित प्ररूप में अन्तरण और अन्तरिती द्वारा आवेदन करने पर रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल किसी भी समय यह अनुज्ञा दे सकेगा कि ऐसे पत्र:—

- (क) भारत के राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल को उसकी शासकीय हैसियत में;  
(ख) भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुसूची बैंक या सहकारी सोसाइटी को, जिनके अन्तर्गत सहकारी बैंक भी हैं;  
(ग) किसी निगम या सरकारी कम्पनी को; और  
(घ) किसी स्थानीय प्राधिकरण को;

प्रतिभूति के रूप में अन्तरित किए जाएंगे:

परन्तु किसी अवयस्क की ओर से तब तक कि वह पत्र का अन्तरण इस उपनियम के अधीन तब तक नहीं होने दिया जाएगा जब तक कि अधिनियम की धारा 5 के, यथास्थिति, खंड (ख) के उपखण्ड (1) या उपखण्ड (ii) में निर्दिष्ट अवयस्क की माता या पिता या संरक्षक यह प्रमाणित नहीं करता है कि अवयस्क जीवित है और अन्तरण अवयस्क के फायदे के लिए है।

(2) जब उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में किसी पत्र का अन्तरण किया जाता है तो रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा, अर्थात्:—

“प्रतिभूति के रूप में-----को अन्तरित”

(3) इन नियमों में जैसा उपबंधित है उसके सिवाय, इन नियम के अधीन किसी पत्र के अन्तरिती के बारे में तब तक यह समझा जाएगा कि वह पत्र का धारक है जब तक कि उसका पुनः अन्तरण उपनियम (4) के अधीन नहीं हो जाता है।

(4) उपनियम (2) के अधीन अन्तरित पत्र को गिरवीदार के लिखित प्राधिकार पर, प्राधिकृत डाकपाल को लिखित रूप में पूर्ण मंजूरी से पुनः अन्तरित किया जा सकेगा और जब ऐसा पुनः अन्तरण किया जाता है तब रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय का डाकपाल पत्र पर निम्नलिखित पृष्ठांकन करेगा, अर्थात्:—

“-----को पुनः अन्तरित”।

टिप्पण 1: सरकार का ऐसा राजपत्रित अधिकारी जो राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल की ओर से उपनियम (1) के अधीन प्रतिभूति के रूप में पत्र स्वीकार करता है या उपनियम (4) के अधीन गिरवी का विमोचन करता है, स्वयं को इस निमित्त प्राधिकृत करने वाली सरकारी अधिसूचना के संख्यांक और तारीख की विनिर्दिष्टियाँ देते हुए, तारीख और कार्यालय की मुद्रा सहित अपने हस्ताक्षर से यह प्रमाणित करेगा कि वह भारत के राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपाल की ओर से ऐसी लिखित या विवेक निष्पादित करने के लिए सम्यक् रूप से प्राधिकृत है।

टिप्पण 2: यथास्थिति भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अनुसूचित बैंक या किसी सहकारी सोसाइटी का, जिनमें सहकारी बैंक, निगम या, सरकारी कम्पनी या स्थानीय प्राधिकरण सम्मिलित है, ऐसा अधिकारी जो अपनी-अपनी संस्थाओं की ओर से उपनियम के अधीन प्रतिभूति के रूप में पत्र स्वीकार करता है या नियम (4) के अधीन गिरवी का विमोचन करता है, तारीख और कार्यालय की मुद्रा सहित अपने हस्ताक्षर से यह प्रमाणित करेगा कि वह उक्त संस्था के अनुच्छेदों के अधीन उसकी ओर से ऐसी लिखित या विवेक निष्पादित करने के लिए सम्यक् रूप से प्राधिकृत है।

(5) जहाँ किसी पत्र पर उपनियम (2) और (4) के अधीन किए गए अनेक पृष्ठांकित के परिणामस्वरूप उस पत्र पर उसी प्रकार का अतिरिक्त पृष्ठांकित करने के लिए कोई स्थान शेष नहीं रहता है, वहाँ ऐसे पत्र के बढ़ने में रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल द्वारा एक नया पत्र जारी किया जा सकेगा।

(6) उपनियम (5) के अधीन जारी किए गए किसी नए पत्र को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए उस पत्र के समतुल्य समझा जाएगा जिसके बढ़ने में वह जारी किया गया है।

13. खो गए या नष्ट हो गए पत्र का प्रतिस्थापन :—(1) यदि कोई पत्र खो जाता है, चोरी हो जाता है, नष्ट हो जाता है, विकृत हो जाता है या विरूपित हो जाता है तो उसका हकदार व्यक्ति उस डाकघर को जिसमें पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है या किसी अन्य डाकघर को, जिस वशा में आवेदन रजिस्ट्रीकरण के डाकघर को भेज दिया जाएगा, पत्र की दूसरी प्रति लिए जाने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(2) ऐसे प्रत्येक आवेदन के साथ एक ऐसा विवरण होगा जिसमें पत्र संख्यांक, रकम और सारीख जैसी विविधियाँ तथा वे परिस्थितियाँ जिनसे ऐसी हानि, चोरी, विनाश, विकृति या विरूपण हुआ है, दर्शाई होंगी।

(3) यदि रजिस्ट्रीकरण के डाकघर के भारमाद्यक अधिकारी का पत्र खो जाने, चोरी, विनाश, विकृति या विरूपण के बारे में समाधान जाता है, तो वह पत्र की दूसरी प्रति तब जारी करेगा जब आवेदक एक या अधिक अनुमोदित प्रतिभूतियों या बैंक की गारन्टी सहित क्षतिपूर्ति बंधपत्र विहित प्ररूप में दे देता है।

परन्तु जहाँ खो गए, चोरी, हुए, नष्ट हुए, विकृत हुए या विरूपित हुए पत्र या पत्रों का अंकित या कुल अंकित मूल्य 500 रु. या उससे कम है वहाँ पत्र या पत्रों की दूसरी प्रति तब जारी की जा सकेगी जब आवेदक ने ऐसी प्रतिभूति या गारन्टी के बिना क्षतिपूर्ति बंधपत्र दे दिया है।

परन्तु यह और कि जब ऐसा आवेदन ऐसे पत्र के बारे में किया जाता है जो विकृत या विरूपित है, तो चाहे वह कितने ही अंकित मूल्य का हो, पत्र की दूसरी प्रति ऐसे क्षतिपूर्ति बंधपत्र, प्रतिभूति या गारन्टी के बिना तब जारी की जा सकेगी, जब विकृत या विरूपित पत्र का अभ्यर्पण कर दिया जाता है और पत्र की पहचान मूल रूप से जारी किए गए पत्र के रूप में की जा सकती है।

(4) उपनियम (3) के अधीन जारी की गई पत्र की दूसरी प्रति को इन नियमों के सभी प्रयोजनों के लिए मूल पत्र के समतुल्य माना जाएगा सिवाय इसके कि इसे उस डाकघर से भिन्न, जिसमें ऐसे पत्र का रजिस्ट्रीकरण हुआ है, अन्य किसी डाकघर में पूर्ण सत्यापन के बिना भुनाया नहीं जा सकेगा।

14. नामनिर्देशन :—(1) उपनियम (2) से (6) के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, पत्र के एकल धारक, या संयुक्त धारक पत्र का क्रय करते समय प्ररूप 1 में आवश्यक विविधियाँ भर कर ऐसे किसी व्यक्ति को नामनिर्दिष्ट कर सकेगा जो, यथास्थिति, एकल धारक या दोना संयुक्त धारकों की मृत्यु की दशा में पत्र और उस पर शोध्य रकम के संशय का हकदार होगा। यदि पत्र का क्रय करते समय ऐसा कोई नामनिर्देशन नहीं किया जाता है तो, यथास्थिति, एकल धारक, संयुक्त धारक या उत्तरजीवी संयुक्त धारा पत्र क्रय करने के पश्चात् किसी भी समय, किन्तु उसके परिपक्व होने के पूर्व, उस डाकघर के जिसमें पत्र का रजिस्ट्रीकरण किया गया है, डाकपाल को प्ररूप 2 में एक आवेदन करके नामनिर्देशन कर सकेगा।

(2) एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिर्देशन ऐसे मामलों में ही किया जाएगा जहाँ पत्र 500 रु. या अधिक अभिधान का है अन्यथा नहीं।

(3) ऐसे किसी पत्र के बारे में कोई नामनिर्देशन नहीं होगा जिसके बारे में किसी अवयस्क द्वारा या उसकी ओर से आवेदन किया गया है और जो उसके द्वारा या उसकी ओर से धारित है।

(4) इन नियम के अधीन पत्र के धारक या धारकों द्वारा किए गए नामनिर्देशन का उस डाकघर के जिसमें वह रजिस्ट्रीकृत है, डाकपाल का पत्र सहित नियम 25 के उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट मूल्य के डाक टिकट लगाकर प्ररूप 3 में आवेदन करके रद्द या परिवर्तित किया जा सकेगा।

(5) विभिन्न तारीखा पर रजिस्ट्रीकृत पत्रों की बाबत नामनिर्देशन के लिए या किसी नामनिर्देशन के रद्दकरण या किसी नामनिर्देशन में परिवर्तन करने के लिए पृथक आवेदन किए जाएंगे।

(6) नामनिर्देशन या किसी नामनिर्देशन का रद्दकरण या किसी नामनिर्देशन का परिवर्तन उस तारीख से प्रभावी होगा जिसको वह डाकघर में रजिस्ट्रीकृत होता है और वही तारीख पत्र पर लिखी जाएगी।

15. परिपक्व होने पर भुनाया जाना :—किसी भी अभिधान के पत्र की परिपक्वता अवधि पत्र की तारीख से आरम्भ होने वाली छह वर्ष की अवधि होगी। इसकी परिपक्वता अवधि की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय पत्र के भुनाए जाने पर संशय रकम, जिसमें ब्याज भी सम्मिलित है, 100 रु. के अभिधान वाले पत्रों के 201.50 रु. होगी और किसी अन्य अभिधान के लिए अनुपातिक दर पर होगी। नीचे सारणी में यथा विनिर्दिष्ट ब्याज पत्र के धारक या धारकों को प्रत्येक वर्ष के अन्त में प्रोद्भूत होगा और प्रत्येक वर्ष के अन्त से पाँचवें वर्ष के अन्त तक इस प्रकार प्रोद्भूत होने वाला ब्याज धारक की ओर से पुनर्विनिहित किया गया माना जाएगा और पत्र के अंकित मूल्य की रकम में जोड़ा जाएगा।

#### सारणी

वर्ष जिसके लिए ब्याज प्रोद्भूत होता है 100 रु. के अभिधान वाले पत्र पर प्रोद्भूत होने वाले ब्याज की रकम (रु. में)।

1	2
पहला वर्ष	12.40
दूसरा वर्ष	13.90
तीसरा वर्ष	15.60
चौथा वर्ष	17.50
पाँचवा वर्ष	19.70
छठा वर्ष	22.40

टिप्पण :— किसी अन्य अभिधान के पत्र पर प्रोद्भूत होने वाले ब्याज की रकम ऊपर सारणी में विनिर्दिष्ट रकम के अनुपात में होगी।

16. समयपूर्व भुनाना :—(1) नियम 15 में किसी धारक के होते हुए भी और उपनियम (2) (3) और (4) के अधीन रहते हुए, किसी पत्र को निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी भी परिस्थिति में समय पूर्व भुनाया जा सकेगा अर्थात् :—

(क) धारक की या संयुक्त धारकों की दशा में किसी भी धारक की मृत्यु होने पर,

(ख) जब गिरवी इन नियमों के अनुरूप है तब ऐसे गिरवीदार द्वारा समग्रहण पर, जो राजपत्रित सरकारी अधिकारी है; य

(ग) न्यायालय का आदेश होने पर।

(2) यदि कोई पत्र, उपनियम (1) के अधीन पत्र की तारीख से एक वर्ष की अवधि के भीतर भुनाया जाता है तो पत्र का केवल अंकित मूल्य संदेय होगा।

(3) यदि कोई पत्र, उपनियम (1) के अधीन पत्र की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् किन्तु तीन वर्ष की समाप्ति के पूर्व भुनाया जाता है तो भुनाया जाना कटौती पर होगा। पत्र के भुनाए जाने पर, पत्र के अंकित मूल्य के समतुल्य रकम साधारण व्याज सहित, संदेय होगी। ऐसे साधारण व्याज की संगणना ऐसे पूर्ण मासों के लिए, जिनके लिए पत्र धारित किया गया है, डाकघर बचत खाता नियम, 1981 के अधीन एकल खातों का समय-समय पर लागू दर पर अंकित मूल्य पर की जाएगी। पूर्वोक्त साधारण व्याज और नियम 15 के अधीन प्रोद्भूत होने वाले व्याज के बीच के अंतर को कटौती समझा जाएगा।

(4) यदि कोई पत्र, उपनियम (1) के अधीन पत्र की तारीख से तीन वर्ष की समाप्ति के पश्चात् भुनाया जाता है तो संदेय रकम, जिसमें नियम 15 के अधीन प्रोद्भूत व्याज भी सम्मिलित है, और कटौती का समायोजन करने के पश्चात् वह होगी जो 100 रु० के अभिधान वाले पत्र के लिए नीचे सारणी में विनिर्दिष्ट है और वह किसी अन्य अभिधान के पत्र के लिए अनुपातिक दर पर होगी।

#### सारणी

पत्र की तारीख से उसके भुनाए जाने की अवधि संदेय रकम जिसमें व्याज भी सम्मिलित है।

(1)	(2)
	रु.
3 वर्ष या अधिक किन्तु 3 वर्ष और 6 मास से कम	132.00
3 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 4 वर्ष से कम	138.50
4 वर्ष या अधिक किन्तु 4 वर्ष और 6 मास से कम	145.00
4 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 5 वर्ष से कम	152.00
5 वर्ष या अधिक किन्तु 5 वर्ष और 6 मास से कम	159.00
5 वर्ष और 6 मास या अधिक किन्तु 6 वर्ष से कम	166.50

17. भुनाए जाने का स्थान:—कोई पत्र उस डाकघर से, जहां वह रजिस्ट्रीकृत हुआ है, भुनाया जा सकेगा:—

परन्तु पत्र को किसी अन्य डाकघर से भुनाया जा सकेगा यदि उस डाकघर के भार-साधक अधिकारी का उसके रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय से यह स्थापन करने पर यह समाधान हो जाता है कि भुनाने के लिए पत्र प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति उसके भुनाने का हकदार है।

18. पत्रों का उन्मोचन:—(1) किसी पत्र के अधीन शोध्य रकम को प्राप्त करने का हकदार व्यक्ति, इसके भुनाए जाने पर, इसके पीछे संदाय प्राप्त करने का प्रमाण के रूप में हस्ताक्षर करेगा।

(2) किसी ऐसे अवस्यक की ओर से त्रय किए गए पत्र की दशा में जिसने सब अवस्यकता प्राप्त कर ली है पत्र उस व्यक्ति द्वारा स्वयं हस्ताक्षरित किया जाएगा किन्तु उसके हस्ताक्षर उस व्यक्ति द्वारा जिसने इसे उसकी ओर से त्रय किया है या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा जिसे डाक पाल जानता, अनुप्रमाणित किए जाएंगे।

(3) नियम 25 के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट फीस के संदाय किए जाने पर पत्र भुनाने वाले किसी व्यक्ति को डाकघर द्वारा उन्मोचन का प्रमाणपत्र दिया जा सकेगा।

19. अवस्यक के पत्र का भुनाया जाना:—(1) अवस्यक की ओर से पत्र को भुनाने वाला व्यक्ति अधिनियम की धारा 5 के खण्ड (ख) के यथास्थिति, उपखण्ड (i) या उपखण्ड (ii) में निर्दिष्ट अवस्यक के माना-पिना या संरक्षक से दृग प्रभाव का एक प्रमाणपत्र देगा कि अवस्यक जीवित है और धन को अवस्यक की ओर से अपेक्षा है।

(2) जब नामनिर्देशित अवस्यक है तो अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (3) के अधीन नियुक्त व्यक्ति पत्र को भुनाने समय यह प्रमाण-पत्र देगा कि अवस्यक जीवित है और धन को अवस्यक की ओर से अपेक्षा है।

20. वारिजों को संदाय:—(1) यदि किसी व्यक्ति को मृत्यु हो जाती है और वह अपनी मृत्यु के समय किसी वचन पत्र का धारक है और उसकी मृत्यु के समय कोई नामनिर्देशित प्रवृत्त नहीं है और उसकी विल प्रोवेट था उसकी संपदा के प्रशासनपत्र या भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 (1925 का 39) के अधीन दिए गए उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र को धारक की मृत्यु से तीन मास के भीतर उपनियम (2) की मारणी में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को पेश नहीं किया जाता है तो, यदि वचन पत्र पर शोध्य रकम 20,000 रु. से अधिक नहीं है (जिसमें समय-समय पर दिए गए और मृतक द्वारा धारित वचन पत्रों पर शोध्य रकम सम्मिलित है), उपनियम (2) की मारणी में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी उसका संदाय किसी ऐसे व्यक्ति को कर सकेगा जो रकम प्राप्त करने का हकदार या मृतक की संपदा का प्रशासन करने वाला प्रतीत हो।

(2) नीचे की सारणी में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी वचन पत्र के धारक की मृत्यु पर प्रत्येक के सामने दी गई सीमा तक उसकी विल के प्रोवेट या उसकी संपदा के प्रशासन पत्र या भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1925 (1925 का 39) के अधीन दिए गए उत्तराधिकारी प्रमाणपत्र के प्रस्तुत किए बिना दावे को मंजूर करने के लिए सक्षम होंगे:—

सारणी	
प्राधिकारी का नाम	सीमा
(1)	(2)
(i) विभागीय उप डाकपाल जो काल-नैतन मान डाकघर में है	500 रु.
(ii) उप डाकपाल जो निम्न चयन श्रेणी डाकघर में है	1000 रु.
(iii) भ्राजपत्रित प्रधान डाकपाल और उप डाकपाल जो उच्चतर चयन श्रेणी में है।	2000 रु.
(iv) उप डाकपाल (उच्चतर चयन श्रेणी में भ्राज-पत्रित) और सहायक प्रेसिडेंसी डाकपाल (उच्चतर चयन श्रेणी में भ्राजपत्रित) जो वचन बैंक शाखा के भारसाधक प्रेसिडेंसी डाकघर में है।	2000 रु.
(v) उप डाकपाल (उच्चतर चयन श्रेणी में भ्राज-पत्रित) और उप प्रेसिडेंसी डाकपाल, जो वचन बैंक शाखा के भारसाधक प्रेसिडेंसी डाकघर में है।	5000 रु.
(vi) राजपत्रित डाकपाल/डाकघर के अधीक्षक/डाकघर के ज्येष्ठ अधीक्षक/प्रेसिडेंसी डाकपाल	10,000 रु.
vii डाक सचिवों के प्रधान/क्षेत्रीय निदेशक	20,000 रु.

21. सेना, वायु सेना और नौसेना के कामियों द्वारा धारित पत्रों का भुनाया जाना :—जहाँ पत्र ऐसे व्यक्ति द्वारा धारित है जो सेना अधिनियम, 1950 (1950 का 46) या वायु सेना अधिनियम, 195 (1950 का 45) या नौसेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) के अधीन है और ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है या वह अभिव्यजन करता है वहाँ उस कोर, विभाग, यूनिट या पोत, जिससे मृत व्यक्ति या अभिव्यजक का संबंध था, का, यथास्थिति, कमान आफिसर या समायोजन समिति उस डाकघर के भारसाधक अधिकारी, को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुआ है, पत्र के अधीन शोध्य रकम उसे संदाय करने के लिए एक अध्यापेक्षा भेजा सकेगी; और डाकघर का भारसाधक अधिकारी ऐसी अध्यापेक्षा का अनुपालन करने के लिए तब भी बाध्य होगा चाहे पत्र के धारक की मृत्यु या अभिव्यजन के समय किसी व्यक्ति के हक में किया गया कोई नाम निर्देशन प्रवृत्त है।

स्पष्टीकरण :—उपर्युक्त अध्यापेक्षा, सेना, या वायु सेना के व्यक्ति की दशा में सेना और वायुसेना (ग्राइवेट संपत्ति का ब्ययन) अधिनियम, 1950 (1950 का 40) की धारा 3 या 4 के अधीन या नौसेना के व्यक्ति की दशा में नौसेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) की धारा 171 या धारा 172 के अधीन की जाएगी।

22. नामनिर्देशितियों के अधिकार :— (1) पत्र के धारक की मृत्यु की दशा में, जिसकी बाबत नामनिर्देशन प्रवृत्त है, नामनिर्देशित पत्र की परिपक्वता से पूर्व या पश्चात् किसी भी समय :—

(क) पत्र को भुनाने या;

(ख) पत्र को समुचित अभिधानों में, व्यक्तिगत नामनिर्देशितियों या संयुक्त रूप से दो व्यस्क नाम निर्देशितियों के पक्ष में उप विभाजित करने,

का हकदार होगा या होंगे।

(2) उपनियम (1) के प्रयोजन के लिए, उत्तरजीवी नामनिर्देशित रजिस्ट्रीकरण के कार्यालय के डाकपाल को धारक की मृत्यु और मृत नामनिर्देशित या नामनिर्देशितियों यदि कोई है, के बारे में सबूत के साथ, एक आवेदन देगा/देंगे।

(3) यदि एक से अधिक नामनिर्देशित हैं तो, सब नाम निर्देशित संदाय प्राप्त करते समय या उसके उपविभाजित के समय पत्र का संयुक्त उत्तमोत्तन करेंगे।

टिप्पण :—जहाँ नामनिर्देशन किसी एकल नामनिर्देशित या दो व्यस्क नामनिर्देशितियों के पक्ष में है वहाँ रजिस्ट्रीकरण का डाकघर उस निमित्त आवेदन दिए जाने पर, यथास्थिति, ऐसे नामनिर्देशित या संयुक्त रूप से नामनिर्देशितियों के नाम में नया पत्र जारी कर सकेगा।

33. एक अभिधान से दूसरे में संपरिवर्तन :—(1) कम अभिधानों के पत्र उसी सकल अंकित मूल्य के उच्चतर अभिधान के पत्र या पत्रों में बदले जा सकेंगे या उच्चतर अभिधान का पत्र उसी सकल अंकित मूल्य के उससे कम अभिधान के पत्रों में बदला जा सकेगा :—

परन्तु भिन्न तारीखों वाले पत्रों को उच्चतर अभिधान के पत्र या पत्रों में बदलने के लिए मिलाया नहीं जाएगा।

(2) बदले गए पत्र या पत्रों के जारी किए जाने की तारीख वही होगी जो अभ्यपित किए गए मूल्य पत्र या पत्रों की है, न कि वह तारीख जिसको पत्र बदला गया है।

24. आयकर :—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन इन मंत्रों के व्याज पर आयकर, नियम 15 में विनिर्दिष्ट वार्षिक प्रोद्भूत के आधार पर लगेगा किन्तु पत्र के उत्तमोत्तन मूल्य के संदाय के समय आयकर की कोई कटौती नहीं की जाएगी।

25. फीस :—(1) निम्नलिखित संव्यवहारों के बारे में पांच रुपए की फीस प्रभार्य होगी, यर्थात् :—

(i) पत्र का एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अन्तरण; जो धारक से न्यायालय को या न्यायालय के आदेश के अधीन अन्तरण से भिन्न है;

(ii) नियम 13 के अधीन पत्र की दूसरी प्रति का जारी किया जाना;

(iii) नियम 18 के अधीन उत्तमोत्तन पत्र का जारी किया जाना;

(iv) नियम 33 के अधीन एक अभिधान से दूसरे अभिधान में संपरिवर्तन।

स्पष्टीकरण :—खण्ड (4) के अधीन संपरिवर्तन के लिए प्रधारित की जाने वाली फीस ऐसे संपरिवर्तन पर जारी किए जाने के लिए अपेक्षित पत्रों की संख्या पर आधारित होगी।

(2) नामनिर्देशन के रजिस्ट्रीकरण या नामनिर्देशन में परिवर्तन या उसके रद्दकरण के लिए प्रत्येक आवेदन पर पांच रुपए की फीस प्रभार्य होगी :—

परन्तु प्रथम नामनिर्देशन के रजिस्ट्रीकरण के किसी आवेदन पर कोई फीस प्रभार्य नहीं होगी।

26. डाकघर का उत्तरदायित्व :—किसी व्यक्ति द्वारा पत्र का कब्जा अभिप्राप्त करने और इसे कपटपूर्वक भुनाने से धारक को हुई हानि के लिए डाकघर उत्तरदायी नहीं होगा।

27. भूल की परिशुद्धि :—डाक विभाग, या महाडाकपाल या डाक प्रभागों के प्रधान अपनी-अपनी अधिकारिता में, या तो स्वमेरणा से या इन नियमों के अनुसरण में जारी किए गए पत्र में हितवद्ध किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए आवेदन पर, उस पत्र की बाबत किसी लेखन या गणित संबंधी भूल को परिशुद्ध कर सकेंगे, किन्तु यह तब जब इससे जब सरकार या किसी ऐसे व्यक्ति को कोई वित्तीय हानि नहीं होती है।

28. शिथिल करने की शक्ति :—जहाँ केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो जाता है कि इन नियमों के किसी उपबन्ध के प्रवर्तन से, पत्र के धारक तो धारकों को अनुचित कष्ट होता है, वहाँ वह कारणों को लेखबद्ध करके आदेश द्वारा उस उपबन्ध की अपेक्षाओं को, ऐसी रीति में, जो अधिनियम के उपबन्धों के असंगत न हो, शिथिल कर सकेगी।

प्रारूप 1

(नियम 6 देखिए)

राष्ट्रीय बचत पत्र (भाठवा निर्गम) के क्रय के लिए आवेदन का प्रारूप

सेवा में

जस सं. —

डाकपाल — डाकघर

मैं/हम—

(क) — और — के नाम में एकल/संयुक्त "क"/संयुक्त "ख" प्रकार के राष्ट्रीय बचतपत्र (भाठवा निर्गम) के क्रय के लिए नकद/ बैंक सं. — द्वारा — रु. (केवल — रुपए) निविदस करता हूँ/करते हैं।

(ख) प्रत्येक की दशा में, जिसकी जन्म की तारीख — है जो प्रत्येक के माता या पिता/संरक्षक श्रीमती — द्वारा भुनाया जा सकेगा।

2. मैं/हम निम्नलिखित व्यक्ति (व्यक्तियों) को नामनिर्देशित करता हूँ/करते हैं जो मेरी/हमारी मृत्यु पर संवाय प्राप्त करेगा/करेंगे।

क्रम सं. नामनिर्देशित का नाम पूरा पता अवयस्क नामनिर्देशित की जन्म की तारीख

1.

2.

3.

3. मैं/हम राष्ट्रीय बचतपत्र (घाटवा निर्गम) नियम, 1989 का पालन करने के लिए करार करता हूँ/करते हैं।

4. पत्र मेरे/हमारे अभिकर्ता—प्राधिकार सं.—

या संदेशवाहक को, जो इस आवेदन को प्रस्तुत करता है, वे दिया जाए। नामनिर्देशन के माफी के हस्ताक्षर और निशान

तारीख—

पता—

पत्र प्राप्त किए—

विनिधानकर्ता/संदेशवाहक/प्राधिकृत;

अभिकर्ता के हस्ताक्षर

जो लागू न हो उसे काट दें।

तारीख—

आकषर द्वारा भरे जाने के लिए

पत्र की निर्गम कीमत भुनाए जाने आकषर के आकषर सहित टिप्प-  
क्रम सं. २० की तारीख आकषर गियाँ जैसे अंतरण,  
दूसरी प्रति का जारी किया जाना, आदि

योग

तारीख—

आकषर के हस्ताक्षर

प्रश्न 2

[नियम 14 (1) देखिए]

क्रम सं. —

सरकारी बचतपत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन नामनिर्देशन के लिए आवेदन का प्रश्न।

(यह प्रश्न धारक/धारकों द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के आकषर को, जहाँ पत्र रजिस्ट्रीकृत हुए हैं, पत्रों सहित दिया जाएगा)। सेवा में,

आकषर,

सरकारी बचतपत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम — जो बचत पत्रों, जिनका स्वीकार नीचे दिया

गया है, का धारक हूँ/हैं, निम्न वर्णित व्यक्ति/व्यक्तियों को, जो मेरी/हमारी मृत्यु पर बचत पत्रों और उन पर शोध राशि जो संदाय होनी है, का अवयव सभी व्यक्तियों का अपवर्जित करते हुए हकदार होगा/होगे, नामनिर्देशित करता हूँ/करते हैं। मैं/हम यह घोषित करता हूँ/करते हैं कि मैंने/हमने इन पत्रों की वास्तविक अवयव तक कोई नामनिर्देशन नहीं किया है।

क्रम सं. नामनिर्देशित का नाम पूरा पता अवयव की वंश में नामनिर्देशित की जन्म की तारीख

(1)

(2)

(3)

2. उपरोक्त क्रम सं. — पर नामनिर्देशित अवयव है/हैं/हम श्री/श्रीमती/कुमारी — (नाम और पूरा पता) को, नामनिर्देशित/नामनिर्देशितियों की अवयवता के दौरान मेरी/हमारी मृत्यु हो जाने की वंश में उस पर शोध राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ/करते हैं।

3. नीचे वर्णित पत्र संलग्न हैं।

पत्रों की क्रम सं. अभिधान जारी करने की तारीख जारी करने वाला कार्यालय

(1) —

(2) —

(3) —

पता

भवदीय,

(निरक्षर धारक की वंश में पिता का नाम दिया जाना चाहिए)

धारक/धारकों के हस्ताक्षर (अंगूठे का निशान यदि निरक्षर हों/हैं)

साक्षी

नाम (1)

पता

नाम (2)

पता

कृपया ध्यान दें—निरक्षर धारक की वंश में साक्षी वे व्यक्ति होंगे जिनके हस्ताक्षर आकषर में हैं।

नामनिर्देशन को स्वीकार करने वाले आकषर का आदेश

आकषर की तारीख मोहर

प्रधान/उप आकषर के हस्ताक्षर

## प्रश्न 3

(नियम 14(4) देखिए)

क्रम सं. -----

सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6 के अधीन बचत पत्रों की बाबत पूर्ववर्ती नामनिर्देशन के रद्दकरण या उसमें परिवर्तन के लिए आवेदन का प्रश्न।

(यह प्रश्न धारक/धारकों द्वारा भरा जाएगा और उस कार्यालय के डाकपाल को, जहां पत्र रजिस्ट्रीकृत हुआ है, पत्र संहित दिया जाएगा)। सेवा में,

डाकपाल

डाक टिकटों के लिए जगह

सरकारी बचतपत्र अधिनियम, 1959 की धारा 6(1) के उपबन्धों के अधीन मैं/हम-----जो बचतपत्र, जिनका व्योरा नीचे दिया गया है, का धारक हूँ/हैं इन पत्रों, जो आपके कार्यालय में संख्यांक-----तारीख-----के अधीन रजिस्ट्रीकृत हैं, की बाबत अपने द्वारा किए गए पूर्ववर्ती नामनिर्देशन को रद्द करता हूँ/करते हैं।

\*रद्द किए गए नामनिर्देशन के स्थान पर मैं/हम निम्नलिखित व्यक्ति/व्यक्तियों को नामनिर्दिष्ट करता हूँ/करते हैं जो मेरी/हमारी मुख्य पर अन्य सभी व्यक्तियों को अपवर्णित करने हुए पत्र/पत्रों और उन पर शोध राशि, जो संभाव्य होनी है, का/के हकदार होगा/होगे।

क्रम सं. नामनिर्देशन/नामनिर्देशितियों का/के नाम	पूरा पता	अवयस्क की वशा में नामनिर्देशितों के जन्म की तारीख
---	----------	---

\*केवल परिवर्तन करने की वशा में भरा जाएगा।

2. उपरोक्त क्रम सं.-----पर नामनिर्देशित अवयस्क हूँ/हैं, मैं/हम श्री/श्रीमती/कुमारी----- (साम और पूरा पता) को नामनिर्देशित/नामनिर्देशितियों की अवयस्कता के दौरान मेरी/हमारी मुख्य हो जाने की वशा में, उस पर शोध राशि को वसूल करने वाले व्यक्ति के रूप में नियुक्त करता हूँ/करते हैं।

3. नीचे वर्णित पत्र संलग्न हैं।

पत्रों का क्रम संख्यांक	अभिधान	जारी करने की तारीख जारी करने वाला कार्यालय
-------------------------	--------	---

(निरक्षर धारक की वशा में पिता का नाम दिया जाना चाहिए)	मधदीय धारक/धारकों के हस्ताक्षर (यदि निरक्षर हो तो भंगुड़े का निशान)
---	---

साक्षी:

नाम----- (1)

पता-----

नाम----- (2)

पता-----

कृपया ध्यान दें--निरक्षर धारकों की वशा में साक्षी के व्यक्ति होंगे जिनके हस्ताक्षर डाकघर में हैं।

नामनिर्देशन को स्वीकार करने वाले डाकपाल

का आदेश

डाकघर की तारीख मोहर

प्रधान/उप डाकपाल के हस्ताक्षर

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

New Delhi, the 1st May, 1989

## NOTIFICATIONS

## THE NATIONAL SAVINGS CERTIFICATES

(VIII Issue) Rules, 1989

G.S.R. 496(E).—In exercise of the powers conferred by Section 12 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the National Savings Certificates (VIII Issue) Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the 8th May, 1989.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,

- (i) "Act" means the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959);
- (ii) "Banking Company" means a banking company as defined in section 5 of the Banking Regulations Act, 1949 (10 of 1949);
- (iii) "cash" means cash in Indian currency;
- (iv) "certificate" means the National Savings Certificates (VIII Issue);
- (v) "company" means a company as defined in the Companies Act, 1956 (1 of 1956);
- (vi) "corporation" means a corporation established by or under any law for the time being in force;
- (vii) "firm" means a firm registered under Indian Partnership Act, 1932 (9 of 1932);
- (viii) "Form" means a form appended to these rules and also includes forms as prescribed by the Department of Posts;
- (ix) "Government Company" means a company as defined in section 617 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);
- (x) "Local Authority" means municipal corporation, municipal committee, district board, Body of port commissioners or other authority legally entitled to or entrusted by the Government with the control or management of municipal or local fund;
- (xi) "Old Certificate" means a certificate issued under the Post Office Savings Certificates Rules, 1960, or the National Savings Certificates (First Issue) Rules, 1965 or the National Savings Certificates (IV Issue) Rules, 1970 or the National Savings Certificates (V Issue) Rules, 1973 or a Bond issued under the National Development Bonds Rules, 1977 or the National Savings Certificates (VI Issue) Rules, 1981 or the



National Savings Certificates (VII Issue) Rules, 1981 or the Social Security Certificates Rules, 1982 or the Kisan Vikas Patra Rules, 1988.

- (xii) "Post Office" means any departmental post office in India doing Savings bank work and such other post office as is authorised by Department of Posts;
- (xiii) "Scheduled Bank" means a bank for the time being included in the second Schedule to the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934);
- (xiv) "Trust" means a trust registered under any law for the time being in force.

3. Denominations in which certificates shall be issued.—The National Savings Certificates (VIII Issue) shall be issued in denominations of Rs. 100, Rs. 500, Rs. 1000, Rs. 5000, Rs. 10000 and such other denominations as may be notified by the Central Government from time to time.

4. Types of Certificates and Issue thereof.—(1) The certificates shall be of the following types, namely :—

- (a) Single Holder Type Certificates;
- (b) Joint 'A' Type Certificates; and
- (c) Joint 'B' Type Certificates.

(2) (a) A Single Holder Type certificate may be issued to :—

- (i) an adult for himself or on behalf of a minor or to a minor;
- (ii) a banking company excluding a Cooperative bank;
- (iii) a company;
- (iv) a corporation;
- (v) an association, institution or a body registered as a society under any law for the time being in force excluding cooperative society;
- (vi) a firm;
- (vii) a local authority;
- (viii) a trust.

(b) A Joint 'A' Type certificate may be issued jointly to two adults payable to both the holders jointly or to the survivor.

(c) A Joint 'B' Type certificate may be issued jointly to two adults payable to both the holders jointly or to the survivor.

5. Purchase of Certificates.—Certificates may be purchased for any amount.

6. Procedure for purchase of certificates.—Any person or body specified in rule 4, desiring to purchase a certificate, shall present at a Post Office an application in Form 1, either in person or through an authorised agent of the Small Savings Schemes,

1148 GI/89-2

7. Legal tender.—Payment for the purchase of a certificate may be made to a post office in any of the following modes, namely;

- (i) cash;
- (ii) a locally executed cheque, pay order or demand draft drawn in favour of the Postmaster;
- (iii) by presenting a duly signed withdrawal form together with the pass book for withdrawal from the Post Office Savings bank account;
- (iv) surrender of a matured old certificate duly discharged as follows.—"Received payment through issue of fresh certificate vide application attached":

8. Issue of certificates.—(1) On payment being made under rule 7, except where payment is made by a cheque, pay order or demand draft, a certificate shall normally be issued immediately, and the date of such certificate shall be the date of payment.

(2) Where payment for the purchase of a certificate is made by a cheque, pay order or demand draft, the certificate shall not be issued before the proceeds of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be, are realised and the date of such certificate shall be the date of encashment of the cheque, pay order or demand draft, as the case may be.

(3) If for any reason a certificate cannot be issued immediately, a provisional receipt shall be given to the purchaser which may later be exchanged for a certificate and the date of such certificate shall be as specified in sub-rule (1) or sub-rule (2), as the case may be.

9. Certificate in lieu of proceeds of old certificate.—A holder of an old certificate entitled to encash that certificate may make an application in Form 1 for the grant of a certificate under these rules; on receipt of such an application, there shall be issued to the applicant a certificate under these rules, the date of issue being the date on which the old certificate duly discharged is presented.

10. Transfer from one post office to another.—(1) A certificate may be transferred from a post office at which it stands registered, to any other post office on the holder or holders making an application in the prescribed form at either of the two post offices.

(2) Every such application shall be signed by the holder or holders of the certificate:

Provided that in the case of Joint 'A' Type Certificate or a Joint 'B' Type certificate, the application may be signed by one of the joint holders if the other is dead,

11. Transfer of certificate from one person to another.—A certificate may be transferred with the previous consent in writing of an officer of the post office as specified below (hereinafter referred to in these rules as authorised Postmaster).

Cases in which transfer can be sanctioned	Designation of the officer competent to grant permission for transfer
(a)(i) From the name of a deceased holder to his heir	Postmaster of the post office where the certificate stands registered.
(ii) From a holder to a court of law or to any other person under the orders of court of law	
(iii) From a single holder to the names of joint holders of whom the transferee shall be one	
(iv) From joint holders to the name of one of the joint holders	
(b) All other cases	Head postmaster

(2) An authorised Postmaster as referred in sub-rule (1) shall give his consent to the transfer of a certificate only if the following conditions are satisfied, namely :—

(a) the transferee is eligible under these rules to purchase certificates ;

(b) the transfer is made after the expiry of a period of at least one year from the date of the certificate or where the transfer is sought before the expiry of such period, the transfer falls under any of the following categories, namely :—

(i) transfer to a near relative out of natural love and affection ;

Explanation. For the purposes of this rule, "near relative" means husband, wife, lineal ascendent or decedent, brother or sister.

(ii) transfer in the name of the heir of the deceased holder ;

(iii) transfer from a holder to a court of law or to any other person under the orders of the court of law ;

(iv) transfer in accordance with rule 12 ;

(v) transfer in the name of the survivor in the event of death of one of the joint holders.

(c) An application for transfer is made in the prescribed form and is signed by the holder or holders of the certificate :

Provided that in the case of a joint 'A' Type Certificate or a Joint 'B' Type Certificate the application may be signed by one of the holders, if the other is dead.

(3) Without prejudice to the provisions of sub-rule (2), an authorised Postmaster shall give his consent to the transfer of a certificate held on behalf of a minor only if at the time of the proposed transfer, a parent or the guardian referred to in sub-clause (i) or, as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act, certifies in writing, that the minor is alive and that such transfer is in his interest.

(4) In every case of transfer, other than a transfer under rule 12, the original certificate shall be duly discharged and the new certificate bearing the same date as that of the original certificate surrendered shall be issued in the name of the transferee.

12. Pledging of certificate.—(1) On an application being made in the prescribed form, by the transferor and the transferee, the Postmaster of the office of the registration may, at any time, permit the transfer of any certificate as security to—

(a) the President of India or Governor of a State in his official capacity ;

(b) the Reserve Bank of India or a scheduled bank or a cooperative society including a cooperative bank ;

(c) a corporation or a Government company ; and

(d) a local authority :

Provided that the transfer of a certificate purchased on behalf of a minor shall not be permitted under this sub-rule unless the parent or the guardian of the minor referred to in sub-clause (i) or as the case may be sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act certifies in writing that the minor is alive and that the transfer is for the benefit of the minor.

(2) When any certificate is transferred as securing under sub-rule (1), the Postmaster of the office of the registration shall make the following endorsement on the certificate, namely :—

"Transferred as security to.....".

(3) Except as otherwise provided in these rules, the transferee of a certificate under this rule shall, until it is re-transferred under sub-rule (4), be deemed to be the holder of the certificate.

(4) A certificate transferred under sub-rule (2), may, on the written authority of the pledgee, be re-transferred with the previous sanction in writing of the authorised Postmaster and when any such transfer is made, the Postmaster of the office of registration shall make the following endorsement on the certificate, namely :—

"Re-transferred to.....".

Note 1.—A Gazetted officer of the Government accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the President or the Governor of a State, shall certify under his dated signature and seal

of office that he is duly authorised to execute such instruments or deeds on behalf of the President of India or Governor of a State, giving the particulars of the number and date of the notification of the Government authorising him in this behalf.

Note 2.—An officer of the Reserve Bank of India or a scheduled bank or a cooperative society including a cooperative bank, a corporation or a Government company or a local authority, as the case may be, accepting the certificate as security under sub-rule (1) or releasing the pledge under sub-rule (4) on behalf of the respective institution, shall certify under his dated signature and seal of office that he is duly authorised under the articles of the said institution, to execute such instruments or deeds on its behalf.

(5) Where as a result of several endorsements made under sub-rules (2) and (4) on a certificate, no space is left for making further endorsements of a like character on that certificate, a fresh certificate may be issued by the Postmaster of the office of the registration in lieu of such certificate.

(6) A fresh certificate issued under sub-rule (5) shall be treated as equivalent to the certificate in lieu of which it has been issued for all purposes of these rules.

13. Replacement of lost or destroyed certificate.—

(1) If a certificate is lost, stolen, destroyed, mutilated or defaced, the person entitled thereto may apply for the issue of duplicate certificate to the post office, where the certificate is registered or to any other post office in which case the application will be forwarded to the post office of registration.

(2) Every such application shall be accompanied by a statement showing particulars, such as number, amount and date of the certificate and the circumstance attending such loss, theft, destruction, mutilation or defacement.

(3) If the Officer-in-charge of the post office of registration is satisfied of the loss, theft, destruction, mutilation or defacement of the certificate, he shall issue a duplicate certificate on the applicant furnishing an indemnity bond in the prescribed form with one or more approved sureties or with a bank's guarantee :

Provided that where the face value or the aggregate face value of the certificate or certificates lost, stolen, destroyed mutilated or defaced is Rs. 500 or less, a duplicate certificate or certificates may be issued on the applicant furnishing an indemnity bond without any such surety or guarantee:

Provided further that where such application is made with respect to a certificate mutilated or defaced, of whatever face value, a duplicate certificate may be issued without any such indemnity bond, surety or guarantee, if the certificate mutilated or defaced is surrendered and the certificate is capable of being identified as the one originally issued ;

(4) A duplicate certificate issued under sub-rule (3) shall be treated as equivalent to the original certificate for all the purposes of these rules except

that it shall not be encashable at a post office other than the post office at which such certificate is registered without previous verification.

14. Nomination.—(1) Subject to the provision of sub-rules (2) to (6), the single holder or joint holders of a certificate may, by filling in necessary particulars on Form 1 at the time of purchasing the certificate, nominate any person who, in the event of death of the single holder or both the joint holders, as the case may be, shall become entitled to the certificate and to the payment of the amount due thereon. If such nomination is not made at the time of purchasing the certificate, it may be made by the single holder, the joint holders or the surviving joint holder, as the case may be, at any time after the purchase of the certificate but before its maturity, by means of an application in Form 2 to the Postmaster of the office at which the certificate stands registered.

(2) There shall not be more than one nominee except in cases where the denomination of a certificate is Rs. 500 or more.

(3) No nomination shall be made in respect of a certificate applied for and held by or on behalf of a minor.

(4) A nomination made by the holder or holders of a certificate under this rule may be cancelled or varied by submitting an application in Form 3 affixing postage stamps of the value specified in sub-rule (2) of rule 25 together with the certificate to the Postmaster of the post office at which the certificate stands registered.

(5) Separate applications for nomination or cancellation of a nomination or variation of a nomination shall be made in respect of certificates registered on different dates.

(6) The nomination or the cancellation of a nomination or the variation of a nomination shall be effective from the date it is registered in the post office, which shall be noted on the certificate.

15. Encashment on maturity.—(1) The maturity period of a certificate of any denomination shall be six years commencing from the date of the certificate. The amount, inclusive of interest, payable on encashment of a certificate at any time after the expiry of its maturity period shall be Rs. 201.50 for denomination of Rs. 100/- and at proportionate rate for any other denomination. The interest as specified in the Table below shall accrue to the holder or holders of the certificate at the end of each year and the interest so accrued at the end of each year upto the end of the fifth year, shall be deemed to have been reinvested on behalf of the holder and aggregated with the amount of face value of the certificate.

TABLE

The year for which interest accrues.	Amount of interest (Rs.) accruing on certificate of Rs. 100 denomination
First year	12.40
Second Year	13.90
Third Year	17.50
Fifth year	19.70
Sixth year	22.40

Note : The amount of interest accruing on a certificate of any other denomination shall be proportionate to the amount in Table above

16. Premature encashment.—(1) Notwithstanding anything contained in rule 15 and subject to sub-rules (2), (3) and (4), a certificate may be prematurely encashed in any of the following circumstances, namely:—

- (a) on the death of the holder or any of the holders in case of joint holders ;
- (b) on forfeiture by a pledgee being a Gazetted Government Officer when the pledge is in conformity with these rules ; or
- (c) when ordered by a court of law.

(2) If a certificate is encashed under sub-rule (1) within a period of one year from the date of the certificate, only the face value of the certificate shall be payable.

(3) If a certificate is encashed under sub-rule (1) after expiry of one year but before the expiry of three years from the date of certificate, the encashment shall be at a discount. On encashment of the certificate, an amount equivalent to the face value of the certificate together with simple interest shall be payable. Such simple interest shall be calculated on the face value at the rate applicable from time to time to single accounts under the Post Office Savings Account Rules, 1981, for the complete months for which the certificate has been held. The difference between the aforesaid simple interest and the interest accruing under rule 15 shall be deemed to be the discount.

(4) If a certificate is encashed under sub-rule (1) after the expiry of three years from the date of the certificate, the amount payable inclusive of interest accrued under rule 15 and after adjustment of discount, shall be as specified in the Table below for a certificate of Rs. 100 denomination and at a proportionate rate for a certificate of an other denomination.

TABLE

Period from the date of the certificate to the date of its encashment	Amount payable inclusive of interest (Rupees)
(1)	(2)
3 years or more, but less than 3 years and 6 months	132.00
3 years and 6 months or more, but less than 4 years	138.50
4 years or more, but less than 4 years and 6 months	145.00
4 years and 6 months or more, but less than 5 years.	152.00
5 years or more, but less than 5 years and 6 months	159.00
5 years and 6 months or more, but less than 6 years	166.50

17. Place of encashment.—A Certificate shall be encashable at the post office at which it stands registered :

Provided that a certificate may be encashed at any other post office if the officer-in-charge of that post office is satisfied on verification from the office of its registration that the person presenting the certificate for encashment is entitled thereto.

18. Discharge of certificate.—(1) The person entitled to receive the amount due under a certificate shall, on its encashment, sign on the back thereof in token of having received the payment.

(2) In the case of a certificate purchased on behalf of a minor who has since attained majority, the certificate shall be signed by such a person himself, but his signature shall be attested by the person who purchased it on his behalf or by any other person who is known to the Postmaster.

(3) A certificate of discharge may be issued by the post office to any person encashing a certificate on payment of the fee specified in sub-rule (1) of rule 25.

19. Encashment of minor's certificate.—(1) A person encashing a certificate on behalf of a minor shall furnish a letter from the parent or guardian of the minor referred to in sub-clause (i), or as the case may be, sub-clause (ii), of clause (b) of section 5 of the Act, to the effect that the minor is alive and that the money is required on behalf of the minor.

(2) When the nominee is a minor, the person appointed under sub-section (3) of section 6 of the Act while encashing the certificate, shall furnish a certificate that the minor is alive and that the money is required on behalf of the minor.

20. Payment to heirs.—(1) If a person dies and is at the time of his death the holder of a Savings Certificate and there is no nomination in force at the time of his death and probate of his will or letters of administration of his estate or a succession certificate granted under the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925) is not, within three months of the death of the holder produced to the authority specified in the Table to sub-rule (2), then if the sum due on the Savings Certificate does not exceed Rs. 20,000 (inclusive of the sum due on the Savings Certificates issued from time to time and held by the deceased), the authority specified in Table to sub-rule (2) may pay the same to any person appearing to it to be entitled to receive the sum or to administer the estate of the deceased.

(2) The authorities specified in the Table below shall be competent to sanction claims upto the limit noted against each on the death of the holder of the savings certificate without production of the probate of his will or letters of administration of his estate or succession certificate granted under the Indian Succession Act, 1925 (39 of 1925).

TABLE

Name of the authority	Limit
(1)	(2)
	Rs.
(i) Departmental Sub-Postmasters in Time Scale Post Office	500
(ii) Sub Postmasters in Lower Selection Grade Post Office	1000
(iii) Non-gazetted Head Postmasters and Sub Postmasters in Higher Selection Grade	2000
(iv) Deputy Postmasters (Non-gazetted in Higher Selection Grade) and Assistant Presidency Postmasters (Non-Gazetted in Higher Selection Grade) in the Presidency Post Office in Charge of Saving Bank Branch	2000
(v) Deputy Postmasters (Gazetted in High Selection Grade and Deputy Presidency Post masters in the Presidency Post Office in charge of Savings Bank Branch	5000
(vi) Gazetted Postmasters/Superintendents of Post Offices/Senior Superintendents of Post Offices/Presidency Postmasters.	10000
(vii) Heads of Postal Circles/Regional Directors.	20000

21. Encashment of Certificates held by Army, Air Force and Navy Personnel.—Where a certificate is held by a person who is subject to the Army Act, 1950 (46 of 1950) or the Air Force Act, 1950 (45 of 1950) or the Navy Act, 1957 (62 of 1957), and such person dies or deserts, the Commanding Officer of the Corps, department, unit or ship to which the deceased or deserter belonged or the committee of Adjutant as the case may be, send a requisition to the officer in charge of the post office where the certificate stand registered to pay him or it the amount due under the certificate; and the officer-in-charge of the post office shall be bound to comply with such requisition even though there is in force at the time of death or desertion of holder of the certificate a nomination made in favour of any person.

Explanation.—The aforesaid requisition must be made under section 3 or section 4 of the Army and Air Force (Disposal of Private Property) Act, 1950 (40 of 1950) in the case of a person belonging to the Army or the Air Force, or under section 171 or 172 of the Navy Act, 1957 (62 of 1957) in the case of a person belonging to the Navy.

22. Rights of nominees.—(1) In the event of the death of the holder of a certificate in respect of which a nomination is in force, the nominee or nominees, shall be entitled at any time before or after the maturity of the certificate to :—

- encash the certificate; or
- sub-divide the certificate in appropriate denominations in favour of individual nominees or two adult nominees jointly.

(2) For the purpose of sub-rule (1), the surviving nominee or nominees shall make an application to the Postmaster of the office of registration, supported by proof of death of the holder and of deceased nominee or nominees, if any.

(3) If there are more nominees than one, all the nominees shall give a joint discharge of the certificate at the time of receiving the payment or sub-division.

Note.—When there is a nomination in favour of single nominee or two adult nominees, the post office of registration may, on an application made in that behalf, issue a fresh certificate in the name of such nominee or nominees jointly as the case may be.

23.—Conversion from one denomination to another.—(1) Certificates of lower denomination may be exchanged for a certificate or certificates of higher denominations of the same aggregate face value or a certificate of higher denomination may be exchanged for the certificates of lower denomination of the same aggregate face value :

Provided that certificate bearing different dates shall not be combined for being exchanged for certificate or certificates of higher denomination.

(2) The date of the certificate or certificates issued in exchange shall be the same as that of the original certificate or certificate surrendered and not the date on which the exchange is made.

24. Income-tax.—Interest on these certifications shall be liable to tax under the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), on the basis of the annual accrual specified in rule 15, but no tax shall be deducted at the time of payment of discharge value.

25. Fees.—(1) A fee of rupees five shall be chargeable in respect of the following transactions, namely :—

- transfer of certificate from one person to another, other than a transfer from the holder to a court of law or under the orders of court of law;
- issue of duplicate certificate under rule 13;
- issue of a certificate of discharge under rule 18;
- conversion from one denomination to another under rule 23.

Explanation.—The fee to be charged for a conversion under clause (iv) shall be based on the number of the certificates required to be issued on such conversion.

(2) A fee of rupees five shall be chargeable on every application for registration of nomination or of any variation in nomination or cancellation thereof :

Provided that no fee shall be charged on an application for registration of the first nomination.

26. Responsibility of the Post Office.—The post office shall not be responsible for any loss caused to a holder by any person obtaining possession of a certificate and fraudulently encashing it.

27. Rectification of mistakes.—The Department of Posts, or the Postmasters General or the Heads of Postal Divisions in their respective jurisdictions, may either suo motu or upon an application by any person interested in any certificate issued in pursuance of these rules, rectify any clerical or arithmetical mistakes, with respect to that certificate, provided that it does not involve any financial loss to the Government or to any such person.

28. Power to relax.—Where the Central Government is satisfied that the operation of any of the provisions of these rules causes undue hardship to the holder or holders of a certificate, it may, by order, for reasons to be recorded in writing, relax the requirements of that provision in a manner not inconsistent with the provisions of the Act.

## FORM 1

(See Rule 6)

## FORM OF APPLICATION FOR PURCHASE OF NATIONAL SAVINGS CERTIFICATES VIII ISSUE

SERIAL NO.....

TO

The Postmaster,

I/We hereby tender Rs. (Rupees  
only) in cash/by cheque No.....

for purchase of National Savings Certificates VIII Issue of the type Single/Joint A/Joint B.

(a) in the name(s) of-----and

(b) in case of minor, his date of birth-----  
encashable by the minor's parent/guardian Shri/Smt.-----

2. I/We nominate the person(s) named below who shall, on my/our death, receive payment

Sl. No.	Name of Nominee	Full Address	Date of birth of nominee
---------	-----------------	--------------	--------------------------

1.  
2.  
3.  
4.

3. I/We hereby agree to abide by National Savings Certificates (VIII Issue) Rules, 1989.

4. The Certificate may be made over to my/our agent Shri/Smt-----Authority No.-----  
or messenger who presents the application.

Signature and address of  
witness to nomination

Signature/thumb impression  
of Investor

Date-----  
Address-----

Delete whichever is not  
applicable

Received the certificate(s)

Signature of Investor/  
messenger/authorised agent  
Date-----

## TO BE COMPLETED BY THE POST OFFICE

Serial Nos. of Certificates	Issue Price Rs.	Date of encash- ment	Initials of the Postmaster	Remarks like trans- fer, issue of dupli- cate etc. with initials
1.				
2.				
3.				
Total				

Date

Signature of Postmaster

## FORM 2

## DEPARTMENT OF POSTS

[See Rule 14(1)]

Serial No. ....

Form of application for nomination under Section 6 of the Government Savings Certificates Act, 1959

(This form will be filled in by the holder(s) and submitted with the certificates to the Postmaster of the Office where the certificates stand registered)

To

The Postmaster,

Under provisions of Section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We.....  
the holder(s) of Savings Certificates detailed below, hereby nominate the persons mentioned below, who shall, on my/our death, become entitled to the Savings Certificate(s) and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons. I/We hereby declare that I/We have not so far made any nomination in respect of these certificates.

Sl. No.	Name of the nominee(s)	Full Address	Date of birth of nominee in case of minor
---------	------------------------	--------------	---

1.  
2.  
3.  
4.

2. As the nominee(s) at serial number(s).....  
above is/are minor(s), I/We appoint Shri/Smt./Kumari.....  
name and full address  
as the person to receive the sum due thereon in the event of  
my/our death during the minority of the nominee(s).

## 3. The certificates detailed below are enclosed.

Sl. Nos of Certificates	Denomination	Date of Issue	Office of Issue
1.			
2.			
3.			

Address : Yours faithfully,

..... Signature (or thumb  
..... impression, if illiterate)  
..... of holder(s)

(In case of illiterate holder, fathers' name should be given)

Witnesses --

Name  
Address (1)

Name  
Address (2)

N.B.—In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signature are known to the Post Office.

Order of the Postmaster accepting the nomination.  
Date stamp of ..... Signature of Head/Sub-Postmaster  
Post Office.

## FORM 3

## DEPARTMENT OF POSTS

[See Rule 14(4)]

Serial No. ....

FORM OF APPLICATION FOR CANCELLATION OR VARIATION OF NOMINATION PREVIOUSLY MADE IN RESPECT OF SAVINGS CERTIFICATES UNDER SECTION 6 OF THE GOVERNMENT SAVINGS CERTIFICATES ACT, 1959, (This form will be filled in by the holder/s and submitted with the certificates to the Postmaster of the Office where the certificate stands registered).

To

The Postmaster,

Space for Postage Stamps.

Under provisions of Section 6(1) of the Government Savings Certificates Act, 1959, I/We, ..... the holder(s) of savings certificates detailed below hereby cancel the nomination previously made by me/us in respect of these certificates and registered in your office under No. .... dated .....

\*In place of the cancelled nomination, I/We hereby nominate the person's mentioned below, who shall, on my/our death, become entitled to the savings Certificate's and to be paid the sum due thereon to the exclusion of all other persons.

Sl. No.	Name of the nominee(s)	Full address	Date of birth of Nominee in case of minor
1.			
2.			
3.			

\*To be filled in case of variation only.

2. As the nominee's at serial .....above is/are minor's. I/We appoint Shri/Smt./Kumari..... (name and full address) as the person to receive the sum due thereon in the event of my/our death during the minority of the nominee's.

3. The Certificates detailed below are enclosed.

Sl. Nos. of Certificates	Denomination	Date of Issue	Office of Issue
1.			
2.			
3.			
4.			

Yours faithfully,

Address :—

(In case of illiterate holder, father's name should be given)

Signature (or thumb Impression  
if illiterate) of holder's

Witnesses :

Name  
Address (1)

Name  
Address (2)

N.B.—In the case of illiterate holders, the witnesses shall be persons whose signatures are known to the Post Office.

Order of the Postmaster  
accepting nomination

Date stamp of  
Post Office.

Signature of Head/Sub-Postmaster

सा.का.नि. 497(अ) :—केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 1 की उप-धारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा यह विनिश्चित करती है कि राष्ट्रीय बचत पत्र-प्राठवां निर्गम बचत पत्रों की ऐसी श्रेणी होगी जिस पर उक्त अधिनियम लागू होता है।

[का. संख्या 3/38/89-एन.एस.-II(ii)]

के.वी.नायर, नायर, अपर सचिव (बजट)

G.S.R. 497(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 1 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby specifies that the National Savings Certificates-VIII Issue shall be the class of savings certificates to which the said Act applies.

[F. No. 3/38/89-NS.II(ii)]

K. V. R. NAIR, Additional Secy. (Budget)

